ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 48- 51**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

आचार्य विनोबा के आदर्श एवं निर्दोष राज्य–पद्धति की धारणा

डॉ0 ब्यूटी कुमारी

एम0 ए0, पी–एच0 डी0 – राजनीति विज्ञान, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received-24.07.2025, Revised-01.08.2025, Accepted-08.08.2025 **E-mail : beautykumari99k@gmail.com**

सारांशः ***यद्यपि विनोबा आधुनिक प्रजातंत्र, जिसे कल्याणकारी राज्य के नाम से भी पुकारा जाता है: के विचार के विरूद्ध है, फिर भी वे कल्याणकारी समाज के विचार का समर्थन करते हैं। विनोबा के अनुसार, एक 'ग्रामदान' निश्चित रूप से कुटुम्ब की भाँति कल्याणकारी समाज ही है। विनोबा 'राज्य शक्ति' और 'राज्य–सत्ता' के स्थान पर 'लोक–शक्ति' तथा 'लोक–सत्ता' के कायल है। वे राज्य के स्थान पर स्वराज्य की स्थापना करना चाहते हैं। वे राजनीति को समाप्त करना चाहते हैं जिसकी बुनियाद हिंसा है तथा जिसमें दलीय और सत्ता की राजनीति को सुरक्षित रखने के लिए सेवा, दंडनीति और कर का विधान किया जाता है। वे शासन के स्थान पर 'आत्मशासन' चाहते हैं जो स्वराज्य की अवस्था है तथा जिसमें न किसी की सत्ता हमपर चलती है और न हम किसी पर अपनी सत्ता चलाते हैं, परन्तु जबतक राज्य संस्था की आवश्यक है, तबतक के लिए विनोबा भौतिक शक्तियों की सत्ता समाज और गाँव को देना चाहते है। राज्य और उससे भी बड़ी केन्द्रीय सत्ताओं के ऊपर नैतिक सार्वभौमिकता प्रदान करना चाहते हैं। विनोबा का विचार है कि वास्तविक प्रजातंत्र तभी स्थापित होगा, जबकि सम्पूर्ण प्रशासन ग्राम–स्तर से लेकर ऊपर तक– जनता के अपने हाथों में होगा और उन्हें अपने कार्यों के लिए प्रतिनिधियों की कम से कम आवश्यकता पड़ेगी। उनका 'ग्राम स्वराज्य' का विचार वास्तविक प्रजातंत्र का आधार–स्थल है। विनोबा के अनुसार "प्रत्यके ग्राम को स्वानुशासित, स्वसंचालित एवं सब प्रकार से आत्मनिर्भर होना चाहिए, तभी उसका कल्याण हो सकता है और तभी सच्चे प्रजातन्त्र की स्थापना की जा सकती है।"[1]***

कुंजीभूत शब्द– आधुनिक प्रजातंत्र, कल्याणकारी राज्य, कल्याणकारी समाज, राज्य शक्ति, राज्य सत्ता, लोक शक्ति, लोक सत्ता।

विनोबा की आदर्श और निर्दोष राज्य–पद्धति की कई अनिवार्य विशेषताएँ हैं। 'अहिंसा राज्य' के संबंध में गाँधी का विचार 'मत' और 'इच्छा' के रूप में प्रकट हुआ था। विनोबा ने उनकी भावनाओं और मतों को अपनी पुस्तक 'स्वराजशास्त्र' में सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान किया है। फिर उनके 'ग्राम–जनतंत्र' और 'लोक–सेवक–संघ' के विचार के आधार पर विनोबा ने 'लोकशक्ति', 'लोकनीति' इत्यादि अहिंसक राज्य के संगठन को साकार बनाने के लिए तथा वास्तव में ग्राम–स्वराज्य और पंचायती राज्य की स्थापना करने के लिए भूदान, ग्रामदान, प्रखंडदान, जिलादान, राज्यदान आदि धारणाओं का विकास किया है तथा इनके लिए व्यापक रूप से आन्दोलन चलाया है, जो 'सर्वोदय आन्दोलन' के नाम से प्रसिद्ध है।

'आदर्श–राज्य–पद्धति' के लिए विनोबा ने दस विशेषताओं का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार हैं –[2]

1. **सावर्राष्ट्रिक भ्रातृत्व :** अर्थात् प्रत्येक अन्य राज्यों के साथ भाईचारा का सम्बन्ध रखेगा। अतः उनके बीच पारस्परिक प्रेम होगा, आक्रमण या दमन की नीति नहीं होगी।
2. **राष्ट्र के सभी लोगों का ज्ञानपूर्वक यथाशक्ति, परन्तु सहजस्फूर्त हार्दिक सहकार :** अर्थात् अहिंसक राज्य में समस्त जनता का सहयोग होगा, परन्तु इसका आधार न तो बाहरी दबाव होगा और न अज्ञानता होगी। ऐसे राज्य में जनता सोच–समझकर अपनी शक्ति के अनुकूल ह्रदय से स्वाभाविक रूप में राज्य को सहयोग करेगी।
3. **समर्थ अल्पसंख्यकों और सर्वसाधारण बहुसंख्यकों का हितैक्य :** अर्थात् समर्थ व्यक्ति जैसे धनवान, शक्तिमान और बुद्धिमान चाहे, वे आम जनता के रूप में हों या राज्य के किसी पद पर हों, असमर्थों के हितों मे कोई विरोध नहीं होगा। राज्य के प्रतिनिधि और आम नागरिकों का हित समान होगा।
4. **सभी के सर्वांगीण और समान विकास की दृष्टि :** अर्थात् राज्य सभी व्यक्ति के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक विकास के लिए समान रूप से प्रयत्न करेगा। सभी के समान रूप से विकास का अर्थ गाणितिक समानता नहीं है। आवश्यकता के अनुसार ही समानता का भाव रखा जायेगा जिसमें व्यक्ति के संस्कार का भी विचार किया जायेगा।
5. राज्य–सत्ता का व्यापकतम विभजन : अर्थात् राज्य–व्यवस्था विकेन्द्रित होगी जिसमें अधिकतम व्यक्ति राज्य–व्यवस्था में भाग लेंगे और राजनैतिक शक्ति का उपयोग करेंगे। केन्द्रित व्यवस्था की भाँति राज्य–शक्ति कुछ ही लोगों के हाथों में नहीं होगी।
6. **अल्पतम शासन :** अर्थात् सरकार की ओर से कम से कम शासन या आदेश या दबाव होगा। कम से कम हिंसक साधन अपनाये जायेंगे। अनुशासन की मात्रा अधिक होगी। राज्य का कार्यक्षेत्र कम से कम होगा। अधिकतम कार्य नागरिकों के द्वारा स्वयं कर लिये जायेंगे।
7. **सुलभतम तंत्र :** अर्थात् प्रशासनिक संस्थाओं की रचना इस प्रकार होगी जिसमें आसानी से बिना परेशानी के नागरिकों का शीघ्र कार्य सम्पन्न होगा। आज की व्यवस्था की तरह लाफीताशाही नहीं रहेगी। ऐसा करने के लिए प्रशासन तंत्र को भी अधिक से अधिक विकेन्द्रित करना होगा।
8. **न्यूनतम व्यय :** आदर्श राज्य में कम–से–कम खर्च में अधिक–से–अधिक की दृष्टि होगी। आज की राज्य–व्यवस्था की तरह सारा खर्च प्रशासन तंत्र पर ही नहीं होगा। विकास के कार्य अधिक होंगे।
9. **कम से कम रखवाली :** राज्य की व्यवस्था इस प्रकार की होगी की उसमें सुरक्षा की समस्या कम से कम उठेगी। केन्द्रित उत्पादन की व्यवस्था में सम्पत्ति एकत्र रहती है, अतः वहाँ सुरक्षा की चिंता अधिक रहती है। आक्रमण या विस्तारवादी नीति रखनेवाले राज्य में भी सुरक्षा की समस्या अति तीव्र है, क्यांकि शस्त्र से प्राप्त वस्तु की सुरक्षा भी शस्त्र से ही होती है, परन्तु अहिंसक राज्य में व्यवस्था विकेन्द्रित होगी और दूसरे देशों से अविरोधी नीति रहेगी, अतएव राष्ट्रीय सुरक्षा की कम–से–कम आवश्यकता होगी।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

10. **सार्वजनिक अव्याहूत और तटस्थ या मुक्त ज्ञान प्रसार :** आदर्श राज्य का आधार निष्पक्ष ज्ञान होगा। अतः राज्य में ज्ञान प्रचार की अधिक आवश्यकता होगी। उसमें किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित नहीं किया जायेगा।

गाँधी–विचार में भी उपर्युक्त सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं, परन्तु विनोबा जनता के ज्ञानपूर्वक सहकार और विचार–प्रचार पर गाँधी की अपेक्षा अधिक बल देते हैं। इन दो तत्त्वों के अभाव में कोई भी राज्य–पद्धति आदर्श नहीं मानी जा सकती।

विनोबा की निर्दोष राज्य–पद्धति के लक्षण – आदर्श एवं निर्दोष राज्य पद्धति के स्वरूप–निरूपण के अतिरिक्त विनोबा ने निर्दोष राज्य–पद्धति के अनिवार्य लक्षणों पर भी विचार किया है। उन्होंने निर्दोष–राज्य–पद्धति के चार अनिवार्य लक्षण बताये हैं।[3] प्रथमतः समर्थों की सामर्थ्य का जन–सेवा के लिए समप्रण, द्वितीय, स्वावलम्बन एवं पारस्परिक सहयोग, तृतीय, अहिंसक सहूकार, प्रासंगिक असहयोग एवं प्रतिकार तथा चतुर्थ सब के प्रामाणिक परिश्रम की कीमत की समानता। निर्दोष राज्य–पद्धति के इन लक्षणों का अब हम अलग–अलग विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

1. **समर्थों की सामर्थ्य का जन–सेवा हेतु समर्पण :** विनोवा का विचार है कि प्रकृति या सामाजिक परिस्थिति के कारण व्यक्ति की सामर्थ्य समाज–सेवा के निमित्त ही प्राप्त होती है, अतएव विनोबा के अनुसार, 'निर्दोष–राज्य–पद्धति' में शक्तिवान, धनवान और बुद्धिमान सभी अपनी सामर्थ्यों का उपयोग जन–सेवा के लिए करेंगे। विनोबा के ही शब्दों में –"बुद्धि का उपयोग है लोकजीवन को ज्ञानमय बनाने के लिए, शक्ति का उपयोग हैं। लोकहितार्थ पराक्रम करने के लिए और सम्पत्ति का उपयोग है उचित रीति से समूचे समाज–शरीर में उत्पादन शक्ति का प्रवाहशील और समान रूप से चितरण करने के लिए।"[4] इसलिए निर्दोष–राज्य–पद्धति में जनता को इस तथ्य का निरन्तर भाम होता रहेगा तथा वह लोकमत का निर्माण करेगी।[5] राज्य इस कार्य में अनुकूलता लाने के लिए समयानुकूल व्यवस्था कर सकता है। यदि समर्थ व्यक्ति समाज की अपनी सेवा अर्पित नहीं करते तो विनोबा के अनुसार 'लोकमत राज्य–प्रणाली के सिद्धान्त के तहत उन्हें अपराधी ठहरा सकता है।[6]

परन्तु विनोबा के अनुसार अपराधी ठहराने का अर्थ यह नहीं है कि उन्हें दंडित किया जायेगा। गाँधी की तरह विनोबा भी दंड–व्यवस्था में विश्वास नहीं करते। उनका यह विश्वास है कि अहिंसा राज्य में कानून या अनुशासन लोकमत के आधार पर ही बनता है।[7] अतः कानून–पालन का अर्थ लोकमत के अनुसर चलना है। प्रायः सामान्य नागरिक लोकमत के अनुसार चलते ही हैं। केवल कुछ समाज के इने–गिने प्राज्ञ और राग–द्वेष से मुक्त व्यक्ति ही नैतिक मर्यादा के पालन के लिए लोकमत की आवश्यकता नहीं समझते। दूसरे, समाज के कुछ संभ्रान्त व्यक्ति लोकमत का उल्लंघन करते हैं। अतः विनोबा का विचार है कि सम्भ्रान्त व्यक्ति जिसे हम अपराधी कहते हैं, दंड देने के बदले उन्हें उन प्राज्ञ व्यक्तियों के पास सुधार के लिए भेज दिया जाय। इस प्रकार विनोबा दंड की अपेक्षा व्यक्ति–सुधार में विश्वास करते हैं।[8]

विनोबा की 'निर्दोष–राज्य–पद्धति' में कृपणता या संग्रह चोरी के समान लोकमत के विरूद्ध समझा जाता है।[9] शायद इसीलिए उपनिषद् को राजा अश्वपति उत्तम राज्य का वर्णन करते हुए कहते हैं: "न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यः।" इसीलिए निर्दोष–राज्य में जरूरतमंद व्यक्तियों के द्वारा माँगने पर नहीं देना भी शिक्षण–शास्त्र के द्वारा अनैतिक सिद्ध किया जायेगा।[10] इस व्यवस्था में राज्य सम्पत्तिवान लोगों की सम्पत्ति छीनने के बदले, ऐसी व्यवस्था करेगी जिससे उन्हें यह एहसास होगा कि उनका धन लोकोपयोगी कार्य में लग रहा है। धन के बिना भी उनकी प्रतिष्ठा सुरक्षित है तथा धन की चिन्ता की जगह पर लोकापयोगी चिन्तन का लाभ उन्हें मिल रहा है।[11] विनोबा का यह विश्वास है कि सम्पत्तिवान संचय की वृत्ति से धनसंग्रह नहीं करते। संग्रह के पीछे प्रतिष्ठा, भावी सुख, भावी जीवन की सुरक्षा, दान, ख्याति, संतान के पालन–पोषण का भाव रहता है। यदि राज्य के द्वारा इन सारी चीजों की व्यवस्था कर दी जाती है जिनमें उन्हें निश्चिन्तता मिले तो यह सभी को मान्य होगा।[12]

विनोबा का विचार है कि निर्दोष राज्य–पद्धति में नागरिकों का यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि विद्या की तरह ही धन का वितरण करने से वह बता ही है तथा 'रामाजरूपी बैंक' में उनका धन अधिक सुरक्षित रहता है।[13] वे सोचने लगते हैं कि असमर्थों की सेवा में ही समर्थों की शोभा है। विनोबा का यह विश्वास है कि इस प्रकार लोक–चिन्तन का नहीं होना ज्ञान का अभाव है। उनके अनुसार समाज में यह 'अर्द्ध–सत्य और अर्द्ध मिथ्या भावना दृढ़ है कि हर व्यक्ति अपनी कमाई का जिम्मेवार और हकदार है।' लेकिन यह पूर्ण सत्य है कि यथाशक्ति कमाई करने वाला कोई भी व्यक्ति सम्मिलित कमाई का समान हकदार है।[14] परन्तु जो शक्ति रखते हुए भी कमाई नहीं करता है, वह हकदान नही हो सकता।[15] अतएव निर्दोष–शासन–पद्धति में कौटुम्बिक न्याय ही लागू होता है। शक्ति की विषमता नैसर्गिक होने के कारण कार्य की विषमता भी नैसर्गिक है। अतः समान जिम्मेदारी का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः शक्ति भर कमाई और समान अधिकार का पारिवारिक नियम निर्दोष राज्य–पद्धति में आर्थिक क्षेत्र में भी समान रूप से लागू होता है। राज्य का कार्य इस प्रकार की व्यवस्था देना है। विनोबा की राय में "इस कार्य को करने के बजाय राज्य–व्यवस्था यदि वैषम्य का ही निर्माण करती हो तो उसे नष्ट अराजकता ही मंजूर करना होगा।[16]

विनोबा के अनुसार समाज समर्थों और असमर्थों के सहयोग से चलता है। एक दूसरे के सहयोग और असहयोग से ही कोई सामर्थ्यवान और असामर्थ्यवान बनता है।[17] अतएव विनोबा कहते हैं कि 'जिस राज्य–व्यवस्था में समर्थों को इतना समझ सकने की बुद्धि न हो कि इन दोनों के मिलने से पारस्परिक हित है, वह राज्य–व्यवस्था नहीं, अराजकता से भी बढ़कर अराजकता है।[18]' अतः निर्दोष–राज्य–पद्धति में समर्थों के हाथ अधिकार अवश्य सौंपे जायेंगे, परन्तु वह अधिकार जनता की सेवा का होगा।

इस प्रकार विनोबा ने निर्दोष–राज्य –पद्धति का न केवल विवरण दिया है, वरन् उसके 'आधर' पर गहराई से चिन्तन करते हुए नये–नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी किया है। संग्रह के मनोविज्ञान और आर्थिक विवरण के दर्शन को उन्होंने बहुत ही बोधगम्य तरीके से समझाया है। संग्रह और कृपणता को चोरी के समान अनैतिक माना है। सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विनोबा राज्य को लोक–भावना फैलाने का महत्त्वपूर्ण दायित्व प्रदान करते हैं। फिर अपराधियों के लिए 'दंड' के बदले 'सुधार' का विचार भी बहुत उत्तम है।

2. स्वावलम्बन और पारस्परिक सहयोग : विनोबा के अनुसार निर्दोष–राज्य–व्यवस्था में समर्थों के द्वारा सेवाकार्य आम जनता के स्वालम्बा रहने पर ही हो सकता है। यदि जनता असहाय और दुर्बल है तथा अपनी स्वतंत्रता का अनुभव नहीं करती है, तो राज्य का शोषण और उसकी परतंत्रता अवश्यंभावी है। अतः निर्दोष–राज्य–पद्धति में हर व्यक्ति के पास 'स्वायत्त' उद्योग की व्यवस्था होगी। हर गाँव को आर्थिक दृष्टि से एक पूर्ण इकाई बन जाना होगा। प्रत्येक गाँव की आवश्यक आवश्यकताओं के मामलों में पूर्णतः और गौण आवश्यकताओं के लिए बहुत अंश में स्वावलम्बी होना होगा। बाकी आवश्यकताओं की पूर्ति राज्य के द्वारा समर्थो के माध्यम से होगी।[19] विनोबा के अनुसार, "आदर्श समाज–व्यवस्था का यह सहज रूप होगा कि खेती के पूरक ग्रामोद्योगों का जाल सारे राष्ट्र में

फैला हो और उनके संरक्षण तथा स्थैर्य का प्रबंध राज्य–व्यवस्था करे।[20] स्वावलम्बन के लिए ग्रामोद्योग से बढ़कर कोई भी सहज, सुलभ और समर्थ योजना नहीं है।[21] विनोबा कहते हैं कि साम्यवादियों की आर्थिक नीति में तीन प्रकार के खतरे हैं।[22] एक तो यह उत्पादन और विवरण की दोहरी प्रक्रिया होने से महँगी है, दूसरी, केंन्द्रित उत्पादन होने के नाते उसकी सुरक्षा की समस्या है तथा तीसरे, समाज–रचना जटिल तथा अन्योन्यावलम्बी हो जाती है जिसमें सुधार के बदले समाज को हानि का ही खतरा है। निर्दोष समाज–रचना सरल होती है जिसका इलाज आसानी से किया जा सकता है। इसमें अन्योनयावलम्बन स्वतंत्र व्यक्तियों का होता है।[23] अतः विनोबा का कहना है कि "हर एक देहाती किसान को अपना बादशाह होना चाहिए और ग्रामीणों का सहयोग बँटी हुई रस्सी की नाई पक्का होना चाहिए।[24] ऐसे व्यक्ति और गाँ को मिलाकर एक सहज और करीब–करीब स्वयं पूर्ण संस्था हो जाती है।

इस प्रकार के गाँवों को संगठित करनेवाली प्रान्तीय सत्ता निमित्त मात्र की प्रान्तीय सत्ता रहती है, ऐसे प्रान्तों को संगठित करनेवाली राष्ट्रीय सत्ता भी निमित्त मात्र की राष्ट्रीय सत्ता है तथा ऐसे राष्ट्रों को परस्पर सहकार में सेगठित करनेवाली निमित्त मात्र 'अखिल–मानव सत्ता' है।[25] विनोबा के अनुसार, 'अखिल–मानव सत्ता' ऐसी होगी जिसमें राम–द्वेष से मुक्त प्राज्ञ व्यक्ति होंगे जो अपने नैतिक बल के द्वारा विश्व मानवता का नियमन करेंगे।[26] इसी प्रकार अन्य केन्द्रीय सत्ताओं की नीतिवत्ता श्रेष्ठ होती जायेगी। अतः हिंसा और दंड–शक्ति के स्थान पर राज्य में तीसरी शक्ति[27] (अहिंसा की शक्ति) का उदय होगा, परन्तु विनोबा के अनुसार स्वावलम्बी और सहयोगी नागरिकों के आधार पर ही ऐसी मानवता की कल्पना की जा सकती है।

3. अहिंसक सहकार, प्रासंगिक असहयोग और प्रतिकार : विनोबा के अनुसार, निर्दोष–राज्य–पद्धति में अहिंसक सहकार, असहयोग तथा प्रतिकार के लिए पूरा विधान होगा, क्योंकि राज्य एक मानव–सापेक्ष–सत्ता है। अतः उत्तमोत्तम राज्य–व्यवस्था में भी उत्तम व्यवस्था का निर्माण नहीं किया जा सकता, यदि उसके शासक योग्य और न्यायाप्रिय नहीं है। इसके निदान के लिए नागरिकों को सहकार, असहकार और प्रतिकार के अवसरों का ज्ञान आवश्यक है। अतः आवश्यकता पड़ने पर इनके तीनों प्रयोग करने की अहिंसक शक्ति जनता के पास होगी।[28] विनोबा के अनुसार अहिंसक सहकार का अर्थ है ज्ञानपूर्वक किया गया सहकार। इसके लिए जनता को यह अनुभव होना आवश्यक हे कि कानून बहुमत से बना है उसे बदलने की शक्ति उसमें है, परन्तु जबतक कानून बदलता नहीं है, तबतक पसंद नहीं आने पर भी उसका पालन स्वेच्छा से आनन्दपूर्वक खुल दिल से वह करे, यदि वह नीति–नियमों के विरूद्ध न हो।[29] विनोबा का मत है कि ऐसे नागरिकों को ही असहकार और प्रतिकार का अधिकार होगा।[30] निर्दोष–राज्य–व्यवस्था में विनोबा असहकार और प्रतिकार की शिक्षा भी आवश्यक मानते हैं।[31]

विनोबा के अनुसार असहकार और प्रतिकार एक ही वस्तु की दो अवस्थाएँ हैं जिनमें पहला सौम्य और दूसरा उग्र अवस्था का द्योतक है। जब सहयोग हटा लेने पर भी प्रतिपक्षी का विवके नहीं जगता तो प्रतिकार किया जाता है जिसमें राज्य के कानून की विशिष्ट मर्यादा में रहकर अनुशासित ढंग से बिना किसी छल–प्रपंच के दृढ़तापूर्वक कम से कम माँगों के पूरा होने तक हार न मानते हुए भंग करना पड़ता है। इसके लिए दी गयी सजा को बिना द्वेष के भुगतान पड़ता है। ऐसे असहकारों और प्रतिकारों का प्रयोग सुराज्य–व्यवस्था में प्रासंगिक होता है, परन्तु समाज जीवन में इनका नित्य स्थान हैं विनोबा का विचार है है कि प्रतिकार न करते हुए अनयाय को सह लेना और फिर आवेश में आकर हिंसक प्रतिकार करना–दोनो बुरा है। अतः निर्दोष–राज्य–पद्धति में सविनय असहकार और प्रतिकार करने की वृत्ति नागरिकों में होगी तथा उस शक्ति का समाज में नैतिक समर्थन होगा जो उत्तम राज्य–व्यवस्था का अंग है। यहाँ विनोबा गाँधी की सत्याग्रह–पद्धति को ही दूसरे रूप में देखते हैं तथा उन्होंने सत्याग्रह के प्रतिकार पक्ष के बदले अहिंसक सहकार पर ही बल दिया है तथा उसकी प्रक्रिया सौम्यतर मानी है।

4. सबके प्रामाणिक परिश्रम की कीमत की समानता : विनोबा के अनुसार, निर्दोष–राज्य–पद्धति का अन्तिम लक्षण यह है कि इसमें सेवा की भावना से किये गये सभी के परिश्रमों का समान आर्थिक और नैतिक मूल्य होगा। समाजोपयोगी कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों को जीने का अधिकार है, अतः राज्य सभी के संगोपन और संरक्षण का भार लेगा। यहाँ भी पारिवारिक न्याय है– कार्य शक्ति के अनुसार और संरक्षण समान, परन्तु संरक्षण की समानता का यह अर्थ नहीं है कि सब को समान वेतन मिलेगा। समान सरक्षण में जरूरत भर ही पारिश्रमिक दिया जायेगा। अतः इस आधार पर अधिक समर्थो पर आवश्यकता वाले व्यक्तियों को कम और समर्थ परन्तु अधिक आवश्यकतावाले व्यक्तियों को अधिक पारिश्रमिक मिल सकता है, फिर भी सभी के वतन मे कम से कम विषमता होगी।

विनोबा के 'निर्दोष–राज्य–पद्धति के तत्त्वों की विवेचना से यह स्पष्ट है कि अहिंसक राज्य की आर्थिक नीति पर विनोबा गाँधी की अपेक्षा अधिक बल देते हैं। गाँधी राज्य को सेवा का कार्य देते हैं, परन्तु इसके आधार पर विनोबा एक तीसरी शक्ति की नयी धारण की कल्पना करते हैं। फिर विनोबा स्पष्ट रूप से सम्प्रभुता का विभाजन दो वर्गों में करते हैं, जिसमें आर्थिक, भौतिक और राजनीतिक सम्प्रभुता व्यक्ति तथा स्थानीय संस्थाओं को और नैतिक सम्प्रभुता राज्य तथा अन्य केन्द्रीय संस्थाओं को देन का सर्मथन करते हैं।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. डा0 आर0 सी0 गुप्त : कतिपय राजनीतिक विचार पृ0 10.
2. विनोबा भावे : सर्वोदय विचार और स्वराज्यशास्त्र, पृ0 166.
3. विनोबा भावे : सर्वोदय–विचार और स्वराज्य शास्त्र, पृ0 171.
4. विनोबा भावे : सर्वोदय विचार और स्वराज्य शास्त्र, पृ0 172.
5. वही।
6. वही।
7. वही, पृ0 172.
8. वही, पृ0 173.
9. वही।
10. विनोबा भावे : सर्वोदय विचार और स्वराज्यशास्त्र, पृ0 173.
11. वही, पृ0 174.
12. वही, पृ0 173–174.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

13. वही, पृ0 175.
14. वही, पृ0 175.
15. वही।
16. विनोबा भावे : सर्वोदय विचार और स्वराज्यशास्त्र, पृ0 176.
17. वही।
18. वही।
19. विनोबा भावे : सर्वोदय विचार और स्वराज्यशास्त्र, पृ0 177.
20. वही।
21. वही, पृ0 178.
22. वही।
23. वही, पृ0 178.
24. वही, पृ0 179.
25. वही।
26. वही, पृ0 179.
27. वही।
28. विनोबा भावे : सर्वोदय विचार और स्वराज्यशास्त्र, पृ0 180.
29. वही, पृ0 180–181.
30. वही, पृ0 181.
31. वही..।

*****